PK 1967
.9
.S9 S77

1955

FT MEADE
ASIAN

THE LIBRARY OF CONGRESS

THE LIBRARY OF CONGRESS

॥ श्रीः ॥

सूरमंजरी.

जिसको

नागरीशिक्षा, भूलोकरहस्य प्रभृति पु-

स्तकप्रणेता देवीचरण पांडेने

संग्रह किया.

उसको

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासने

अपने "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें

छापकर प्रकट किया.

शके १८२०, संवत् १९५५.

कल्याण-मुंबई.

॥ श्रीः ॥

सूरमंजरी.

Surdasa, 1483?-1563?

जिसको

नागरीशिक्षा, भूलोकरहस्य प्रभृति पु-

स्तकप्रणेता देवीचरण पांडेने

संग्रह किया.

Pāṇḍe, Devīcaraṇa

उसको

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदासने

अपने "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें

छापकर प्रकट किया.

शके १८२०, संवत् १९५५. [1898]

कल्याण-मुंबई.

PK1967
.9
.S9S77
1955
Orien
Bray

इस पुस्तकका रजिष्टरी सब हक्क १८६७ के ऍक्ट २५ के
बमूजब यन्त्राधिकारीने अपने स्वाधीन रक्खा है.

नूतन पुस्तकोंकी जाहिरात.

पद्मकोश भा० टी०	... ...	०—४
संगीत सुदामालीला	... .	०—२
आदित्यव्रतकथा भा० टी०	....	०—२
बिरबर अकबरका उपहास	....	०—८
दिल्लगीकी पुडिया प्रथम भाग	....	०—२
,, द्वितीय भाग	...	०—२
,, तृतीय भाग	...	०—२
,, चतुर्थ भाग	...	०—२
,, पंचम भाग	....	०—२
सूर्यकवच भा० टी०	... .	०—१
तत्त्वप्रदीप (जातकग्रंथ)	....	०—४
अमरकोश भा० टी० शब्दानुक्रमणिकासह		१—८
बृहत्प्रेतमंजरी भा०टी०	... ...	०—१०
नासिकेत भा० टी०	... ...	०—८
भागवत मूल बडा खुलापत्रा	...	५—०
लघुसिद्धांत कौमुदी भा० टी०	...	२—०
संवत्सरफलदीपिका (भाषा)	...	०—३
मासचिंतामणि भाषाटीका	...	०—३
स्वरतालसमूह (सितारका पुस्तक)	....	१—८

नासिकेत भाषा (वार्तिक)	...	०—५
तत्त्वबोध भाषाटीका ...	...	०—२॥
भुवनदीपक भाषाटीका और संस्कृतटीका		०—८
विवाहविचार भाषा प्रथम भाग	...	०—२
चौतालचंद्रिका ...	...	०—४
केशवस्तव भा० टी० ...	...	०—२
नरसी भक्तका ख्याल. ...	...	०—४
नृसिंहपंचासिका ...	...	०—२
श्रीबदरीनारायणशतक ...	...	०—३
धौम्यनीति भाषाटीका ...	...	०—४
संतानगोपालस्तोत्र ...	...	०—२
हारीतसंहिता भाषाटीका...	...	३—०
दत्तकारुण्यलहरी (संस्कृत मूल)	...	०—१
राजवल्लभनिघण्टु भाषाटीका	...	१—८
संकल्पकल्पना... ...	...	०—८
पुरंजनाख्यान भाषाटीका	...	०—४
पंचरत्न गीता गुटका भा०टी०	...	१—०
ज्योतिःशास्त्रनिघण्टु ...	...	०—२
कैवल्योपनिषद् भा० टी०	...	०—१

दत्तकारुण्यलहरी भाषाटीका ... ०—३
ग्रहगोचर ज्योतिष भा० टी० ... ०—२
गोविंदगुणवृन्दाकर भाषा पद्यमें ... १—०
श्राद्धविधान भाषाटीका... ... ०—६
मसिसागर (शाईबनानेकी पुस्तक)... ०—२
वियोगवैराग्यशतक भाषा ... ... ०—१
अहिरावणलीला ... ... ०—४
बृहत्संहिता भा०टी०ग्लेज ४ रु० रफ् ३—८
भजनरसमाल ... ... ०—४
भोजप्रबंध भा० टी० ... ... १—४
अनेकसंग्रह २ भाग ... ... २—८
दत्तात्रेयतंत्र भाषाटीका ... ... ०—१०
उड्डीशतंत्र भा० टी० ... ... ०—८
स्त्रीपुरुषसंजीवन भा० टी० ... ... ०—८
दुर्गासप्तशती छोटा गुटका बा० ... ०—६
काव्यमंजरी भाषामें छपके तैयार है. १—८
ब्रजविलास मोटा अक्षर ... ... ५—०
भूलोकरहस्य ... ... ०—३
अद्वैतसुधा वेदांतग्रन्थ (संस्कृत) ... ०—१२

माघमाहात्म्य भाषाटीका ... ... १—८
तुलसीकृत रामायणकी बाराखडी ... ०—१
विजयाविनोदतंरगिणी ... ... ०—४
सदाचार भाषाटीका ... ... ०—२
शीलनिरूपणाध्याय भाषाटीका ... ०—२
तीर्थमाला (अर्थात् तीर्थदर्पण और
पवित्र स्थान निरूपण) भाषामें ... ०—५
दृष्टांतपच्चीसी ... . ०—३
मांझपच्चीसी तथा मांझबतीसी ... ०—१
अद्भुतमानलीला ... ... ०—२
संगीत सुधानिधि तृतीय भाग ... ०—२
जानकी सत्सई—इसमें नायक नायिकाका
लक्षण, चेट विट विदूषक आदिकोंका
लक्षण, शृंगारादि सब रसोंका निरू-
पण, स्थायिभावोंका वर्णन, दश अव-
स्थाओंका बयान, स्त्रीका नख शिख
वर्णन इत्यादि साहित्यके बहुत विषय
हैं इसके कुल दोहे ७०० हैं ... ०—७

घेरंडसंहिता भाषाटीका (योगशास्त्रग्रंथ)

यह एक अपूर्व योगशास्त्रका ग्रंथ संपादित कर छाप दिया है. यह अप्रसिद्ध ग्रंथ आजतक कहांभी नहीं छपा. इसमें घेरंडजीने चंडकापालिराजाको सात उपदेशों में योगशास्त्रकी सब गुह्य २ बातें अर्थात् आसन मुद्राध्यान धारण समाधि सगुण निर्गुण उपासनादि सब विषय नियमसहित बतला-कर उसको मोक्षसुखभागी कर दिया है. जिसको योगशास्त्रके रहस्यका अभ्यास करना या मर्म जानना हो उसने अवश्यही पास रखना बहुत उचित है. की० १० आना,

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापाखाना,

कल्याण—मुंबई.

धन्यवाद.

प्रगट हो कि इस पुस्तकके अनेक गान मेरे नाना मृत महात्मा राधाकृष्ण त्रिवेदीजीके संगृहीत मुझे प्राप्त हुए थे. उन्हींको मैं लेकर पुस्तकाकार मुद्रित करायी है. यद्यपि मैंने उनको नहीं देखा तथापि उनको हृदयके साथ धन्यवाद देता हूं क्योंकि यह उन्हींकी दया है.

देवीचरण पांडे.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

सूरमंजरी लिख्यते ।

अथ कृष्णलीला ।

राग सारंग—साधोजू सूरमंजरी सुनिये ॥ जाके सुनत परम निधि पावै सोई काहि न गुनिये ॥ यह अभ्यास परम गति पावै अपने श्रवनन सुनिये ॥ जो जन सुनि पुनि गावै लीला चित दै सोई सुनिये ॥ तीनि लोक चंदनके काजे कनकके मंदिर चुनिये॥ १ ॥

राग केदारा—अँधियारी भादौंकी राती॥ बालक अरु वसुदेव देवकी पठै पठै पछिताती ॥ बीच नदी घन गरजत वरसत दामिनि आवति जाती ॥ सोचत महासेजसी री मैं कंस डरन अकुलाती ॥ गोकुल होति अनंद वधाई सुनि गुनि हरिहि सिहाती ॥ सूरदास आनंद नंदको दान देत बहु जाती ॥ २ ॥

राग रामकली—आई री मैं आई री यक भलिय बात सुनि आई ॥ गहरि जसोमति बेटा जायो घर घर होति बधाई ॥ द्वारे भीर गोप गोपिनकी महिमा वरणि न जाई ॥ अति आनंद होत गोकुलमैं रतनभूमि सब छाई ॥ नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक गोरस कीच मचाई ॥ सूरदास स्वामी सुखसागर सुंदर श्याम कन्हाई ॥ ३ ॥ शोभित कर नवनीत लिये ॥ घुँटुवन चलत रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किये ॥ चारु कपोल लोल लोचन गोरचन तिलक दिये ॥ लट लटकन मदमत्त मधुपगण मादक मधुहि पिये ॥ कठुला कंठ कुटिल केहरि नख राजित रुचिर हिये ॥ धन्य सूर एकौ पल यह सुख कह सतकल्प जिये ॥ ४ ॥

राग धनाश्री—चोरी करत स्याम घर पाये ॥ निशि वासर मुहिं बहुत सँतावत अब हरि हाथहि आये ॥ माखन दधि सब मेरो खायो बहुत अचकरी कीन्ही ॥ अब तो घात पन्यो हो लालना तुम्हे भले मैं चीन्ही ॥ द्वौ भुज पकरि कहो कहँ जै माखन लेहु मँगाई ॥ तेरी सों मैं नेकु न

चाख्यौ सखा गये सब खाई ॥ मुख तन चितै विहँसि हँसि दीन्हो रिस तब गई बुझाई ॥ लयो कान्ह उर लाइ ग्वालिनी सूरदास बलिजाई ॥ ५ ॥ माखनचोर री मैं पायो ॥ सब ग्वालिनि मिलि देत उरहनो पूत बडे हरो पायो ॥ नई कँमोरियां दहू जमायो देवन पूजन पायो ॥ नितको नितही खाइ जातु है आजु घातमें आयो ॥ जब जसुमति कर लई लकुटियां घूंघुटमें डर पायो ॥ विहँसत वदन उघरि गइ दँतियां सूर हृदय लै लायो ॥ ६ ॥

राग मलार—महरि तूं बडी कृपण है माई ॥ स्याम सुन्दर माखनके कारण बांध्यो ऊखल लाई ॥ बालक बहुत नहीं री तेरे एकै कुँवर कन्हाई ॥ सोऊ तौ घर घर डोलत है माखन खात चुराई ॥ वृद्ध वैस पूरे पुन्यनते महरि महानिधि पाई ॥ सुनिकै वचन चतुर नागरिके जसुमति नंद सुनाई ॥ सूरश्याम चोरीके मिससो देखनको री आई ॥ ७ ॥ मोहिं कहत जुवती सब चोर ॥ खेलत रहो कहूँ मैं बाहिर चितै है सब मेरी ओर ॥ बोलि लेत भीतर घर अपने मुख चूंबत भरि लेत

अँकोर ॥ माखन होरि आपने कर कछु गहिकै पंथ सो करत निहोर ॥ जहां मोहिं देखत तहँ टेरत मैं नाहिं जाउं दुहाई तोर ॥ सूरश्याम हँसि कंठ लगायौ वै तरुनी कहँ बालक मोर ॥ ८ ॥ पूछति जननि कहां हति प्यारी ॥ कोने तेरे भाल तिलक रुचि दीन्हो कच गुथि मांग सँवारी ॥ खेलत रही नंदके आंगन जसुमति कही कुँवरि इह आ री ॥ तिल चावरी गोद दिखरावति फरिआ दई फारि नई सारी ॥ मेरो नांउ बूझि बाबाको तेरो नाउ पूछि दे गारी ॥ मो तन चितै चितै ढोटा तन कछु सविता तन गोद पसारी ॥ यह सुनिकै वृषभानु मुदित चित हँसि हँसि पूंछत बात दुलारी ॥ सूर सुनत रससिंधु बढ्यो अति देखत मनमैं याहि विचारी ॥ ९ ॥

राग बिलावल–नंदमहरिसों कहति जसोदा सुरपतिकी पूजा बिसराई ॥ जाकी कृपा वसत व्रजभीतर ताकी दीन्ही भई बडाई ॥ जाकी कृपा दूध दधि पूरण सहज मथानी मथत सदाई ॥ जाकी कृपा अन्न धन मेरे जाकी कृपा रिद्धि सिधि आई ॥ जाकी कृपा पुत्र भयो मेरे कुशल रहो

बलिराम कन्हाई ॥ सूर नंदसों कहति जसोदा दिन आयो अब करत बडाई ॥ १० ॥

राग सूहा—बाजति नंद अवास बधाई ॥ बैठे खेलत द्वार आपने सात वरसके कुँवर कन्हाई ॥ बैठे नंदसहित वृषभानै और गोप बैठे सब आई ॥ ओप देत घरनके द्वारे गावति मंगल नारि बधाई ॥ पूजा करत इंद्रकी जानो आयो श्याम तहां अतुराई ॥ वारवार बूझति हरि नंदहि कौन देवकी करत पुजाई ॥ इंद्र बडे फल देव हमारे उनते यह सब होति बडाई ॥ सूरश्याम तुमरे हितकारण यह पूजा हौं करत सदाई ॥ ११ ॥

राग बिलावल—व्रज घर घर अति होत कुलाहल ॥ ग्वाल फिरत उमँगे सब जहँ तहँ अति आनंद उमाहल ॥ मिलत परस्पर अंकम दै दै सकटन भाजन साजत ॥ लखि लवनी मधुमाट धरत लै स्याम राम सँग राजत ॥ मंदिरतें लै धरत कंजपर षट रस कीज्यौं नार ॥ डालन भरि अरु सकल नये भरि जोरत हैं परकार ॥ सहस सकल

मिष्टान अन्न भो नंदमहरि घरहीको ॥ सूर चले सब लै लै घरतें संग सुवन नँदहीको ॥ १२ ॥

राग नट—बहुतजु रे व्रजवासी लोग ॥ सुरपति पूजा मेटि गोवर्धन है वाके संजोग ॥ योजन वीस एक अरु अगरो डेरा जिहिं उनमान ॥ व्रजवासी नर नारि अंत नहिं मानहु सुधन सुधान ॥ इक आवत व्रजतें इतहींको इक इततें व्रज जात ॥ नंद लये तिहिं ग्वाल सूर प्रभु आइ गये तिहिं प्रात ॥ १३ ॥

राग सोरठ—व्रजके लोग फिरत वितताने ॥ गये न लै वन ग्वाल गयेते धाए धाए व्रजहि पराने ॥ कोउ चितवत नभ तन चक्रित ह्वै कोउ गिरि परत धरनि अकुलाने ॥ कोउ पहुँचे जैसे तैसे व्रज कोउ ढूंढत घर नहिं पहिचाने ॥ सूरदास गोवर्द्धन पूजा कीन्हे कर फल लेहु विहाने ॥ १४ ॥

राग बिलावल—राखि लेहु गोकुलके नायक ॥ भीजत गाइ ग्वाल गौवनसुत विषम बूंद लागत तन सायक ॥ मुशलधार वरसत सेनापति महामेघ मघवाके पायक ॥ ऐसो नंदको सुतहि सहायक

यह दुर्दशा मेटिवे लायक ॥ अघमर्दन नखवदर विदारन बकीविनाशन व्रजसुखदायक ॥ सूरदास प्रभु अब उर काको जाके हरिसे सदा सहायक ॥१५॥

राग गौरी—श्याम लियो गिरिराज उठाई ॥ धीर धीर हरि कहत सबनिसों गिरि गोवर्द्धन कियो सहाई ॥ नंद गोप ग्वालनके आगे देव प्रगट यह कह्यो सुनाई ॥ काहेको व्याकुल भय डोलति रक्षा करो देवता आई ॥ सत्ति वचन गिरिदेव कहति है कान्ह मोहिं कर लियो बनाई ॥ सूरदास नारी नर व्रज के कहत धन्य तुम कुँवर कन्हाई ॥ १६ ॥

राग मल्लार—गिरि जनि गिरै श्यामके करते ॥ करत विचार सकल नर नारी भय उपराजति उरते ॥ लै लै लकुट ग्वाल सब धाये करत सहाय उठाये तरते ॥ यह है प्रबल स्याम अति कोमल राम राम कै कै ऊपरते ॥ जमलाअर्जुन दो कुबेरसुत किते उपारे जरते ॥ सूरदास प्रभु इंद्रगर्व कियो व्रज राख्यो है वरते ॥१७॥ सुरपति चरण परो गहि धाई ॥ जुग गुन धोइ शेष गुण जानौ सरन राखि सरनाई॥ तुम विसर्‌यो तुह्मारि माया मैं

तुम विनु नाहीं और सहाई ॥ सरन सरन पुनि पुनि कहि कहि महि राखि राखि त्रिभुवनपति राई ॥ मोतें चूक परी विनु जाने कीन्हे मैं अपराध बनाई ॥ तुम माता तुमही जगधाता तुम भ्राता अपराध क्षमाई ॥ बालक जौं जननीसो बिचटै त्यों माता तकि लेत मनाई ॥ ऐसी है मुहिं करौ कृपानिधि सूरस्याम ज्यों सुतहित माई ॥१८॥ देख्यो मातु वदन वरिआई ॥ मदनगुपाल धर्‍यौ कर गिरिवर इंद्र ढीठ झरि लाई ॥ सेवक करै स्वामिसों सरवर इन बातनि पतियाई ॥ ढीठ इंद्र बलि खात हमारी देखो अकिल गँवाई ॥ सूरदास आयेगो सीवांजा वन सिंह कन्हाई ॥ १९ ॥

राग सोरठ—गिरिवर कैसे लियो उठाई ॥ कोमल कर जसुदा यह चापति कहि कहि लेति बलाई ॥ महा प्रलयजल तापर राख्यौ इक गोवर्द्धन भारी ॥ नेक नहीं टार्‍यो नखपरतें मेरो सुत अहँकारी ॥ कंचन थार दूध दधि रोचन साजि मोर लै आई ॥ हरष भरत उर तिलक करत सुख भुजभरि कंठ लगाई ॥ रिस करिके सुरपति चढि

आयो देनो व्रजहि बधाई ॥ सूरस्यामसों कहति जसोदा गिरिवर बडो कन्हाई ॥ २० ॥

राग बिलावल—धरन धरन व्रज होत बधाई ॥ सात बरसके कुँवर कन्हैये गिरिवर धरि जीत्यो सुरराई ॥ गर्वसहित आयो व्रज बोरन यह कहि मेरी भगति गँवाई ॥ सात दिवस भरि बरसि सिहान्यो तब आयो डर पाई ॥ कहा कहा संकट नहिं मेटत नर नारी सब करत बडाई ॥ सूरस्याम अबकै व्रज राख्यो ग्वाल करत सब नंद दुहाई ॥ २१ ॥

राग नट—राखि लियो व्रज नंदकिसोर ॥ आये इंद्रगर्व कै कै चढि सात दिवस बरषा भयौ भोर ॥ वामभुजा गोवर्धन धार्‌यो अतिकोमल नखहीकी कोर ॥ गोपी ग्वाल गाइ व्रज राखी नेक न आई बूंद झकोर ॥ अमरापति तब चरन पर्‌यो लै जब बीते जुगगुनके जोर ॥ सूरस्याम करुणा करि ताक्यो पठै दियो करि मानि निहोर ॥ २२ ॥

राग बिलावल—जागहु लाल ग्वाल सब टेरत ॥ कबहुँ पितंबर डारि बदनपर कबहुँ उघारि जननि तन हेरत ॥ सोवतमें जागत मनमोहन

बात सुनत सबकी अब हेरत ॥ बारंबार जगावति माता लोचन कबहुँ पलक पुनि घेरत ॥ पुनि कहि उठी जसोदा मैया उठौ कान्ह रविकिरन उघेरत ॥ सूरस्याम हँसि चितै मात मुखपर कर लै पुनि पुनि मुख फेरत ॥ २३ ॥

राग सारंग—रीझत ग्वाल रिझावत स्याम ॥ मुरलि बजावत सखनि बुलावत सुबल सुदामा लै लै नाम ॥ हँसत सखा सब तारी दै दै ना मुँह मारो मुरली लेत ॥ स्याम कहत अब तुमहुँ बुलावहु अपने करते ग्वानि देत ॥ मुरली लै लै सबै बजावत काहूपैं नहिं आवै रूप ॥ सूरस्याम तुमरे मुख बाजत कैसे देखों रंग अनूप ॥ २४ ॥

राग कल्याण—ये द्वौ मेरे गाइचरैया ॥ मोल बिसाहि लयो मैं तुमको तब रहौ द्वौ नन्हैया ॥ तुमसों टहल करावत निस दिन और न टहल करैया ॥ यह सुनि स्याम हँसे कहि दोऊ झूंठ कहति है मैया ॥ जानि परति नहिं साचु झुठाई धेनु चरावत ररह झुरैया ॥ सूरदास प्रभु हँसति जसोदा मैं चेरी कहि लेति बलैया ॥ २५ ॥

राग बिहागरो—देखत नंद कान्ह अति सोवत ॥ भूखे आजु रहे वनभीतर यह कहि कहि मुख जोवत ॥ कहो नहीं मानत काहूको आयु हठी द्वौ वीर ॥ वारवार तन पोंछति करसों अतिहि प्रेमकी पीर ॥ सेज मंगइ लई तहँ अपनी जहां स्याम बलिराम ॥ सूरदास प्रभुके ढिग जोये संग पौढि नंद वाम ॥ २६ ॥ जागि उठे तब कुँवर कन्हाई ॥ मैया कहां गई मो ढिगते संग सोवत जान्यो बलि भाई ॥ जागे नंद जसोदा जागी बोलि लयो हरि पास ॥ सोवत झझकि उठे काहेतें दीपक कियो प्रकास ॥ सपने कूदि परे जमुनादह काहूं दयो गिराई ॥ सूरस्यामसों कहति जसोदा जनि हो कान्ह डराई ॥ २७ ॥

राग सूहा—कंस बुलाइ दूत इक लीन्हे ॥ कालीदहके फूल मँगाये पत्र लिखाइ ताहि कर दीन्हे ॥ यह कहि यो व्रज जाइ नंदसों कंसराइ अति काज मँगाई ॥ तुरत मँगाई दीजियै अबही भली भांति कहि कहि समुझाई ॥ यह अंतरजामी जिय जानी आपु रहे वन ग्वाल पठाई ॥ सूर स्याम

व्रजजनसुखदायक कंस काल जिय हरष बढाई २८

राग बिलावल—नंद सुनत मुरझाइ गये ॥ पाती बांचि दूत मुखबानी यह सुनि चकित भये ॥ मोहन खुटक बासके मनके आजु कही यह बात ॥ कालीदहके फूल कहाधों को आनै पछितात ॥ और गोप तब नंद बुलाये कहत सुनत सकुचात ॥ सनहु सूर नृप यह भिग आयो चलि मोहन पैं जात ॥ २९ ॥

राग नट—स्याम सखाकों गेंद चलाई ॥ सीदामा मुरि अंग बचायो गेंद परो कालीदह जाई ॥ धाइ गही तब फेट स्यामकी देहु न मेरो गेंद मँगाई ॥ और सखा जनि मो कहँ जानहु मोसो जनि तुम करो ढिठाई॥ जानि बूझि तुम गेंद गिरायो अब दीन्हे ये बनै कन्हाई ॥ सूर सखा सब हँसत परस्पर भली करी हरि गेंद गँवाई ॥ ३० ॥

राग सोरठ—फेंट छाडि मिरो देहु सिदामा ॥ काहेको तुम रारि बढावत तनक बातके कामा ॥ मेरी गेंद लेहु ता बदले बांह गहत कत धाई ॥ छोटे

बडे न जानत काहू करत बरोबरि आई ॥ हम काहेको तुमहिं बरोबरि बडे नंदके पूत॥ सूर स्याम दीन्हेई बनि है बहुत कहावत धूत ॥ ३१ ॥ रिस करि लीन्ही फेंट छुडाई ॥ सखा सबै देखत हैं ठाढे अपना चढे कदमपर धाई ॥ तारी दै दै हँसत सबै मिलि स्याम गये तुम भागि डराई ॥ रोवत चले सिदामा घरको जसुमति आगे कहि हौ जाई ॥ सखा सखा कहि स्याम पुकारो गेंद आपनी लेहु न आई ॥ सूर स्याम पीतंबर काछे कूदि परे दहमें कहराई ॥ ३२ ॥

राग गौरी—हाइ हाइ कहि सबनि पुकार्‌यो ॥ गेंद काज यह करी सिदामा नंदमहरिको ढोटा मार्‌यो ॥ जसुमति चली रसोई भीतर तबहि ग्वालि यक छीकी ॥ ठिठुकि रही द्वारेपर ठाढी बात कछू नहिं नीकी ॥ आई तहां नंदकी रानी बहुर्‌यो देखु मिटाई ॥ मंजारी आगे व्है निकसी पुनि फिरि बाहिर आई ॥ व्याकुल भई निकसि गइ बाहिर कहँधौ गयो कन्हाई ॥ बायें काग दाहिने खरसुर व्याकुल घर फिरि आई॥ खिन भीतर खिन बाहिर

आवति खिन आंगन यहि भांती ॥ सूर श्याम
टेरति जननी नेक नहीं मन शांती ॥ ३३ ॥

राग नट—नंदघरनिसों पूछति बात ॥ व
हराइ गयो क्यों तेरो कहा गयो बलिमोहन तात
भीतर चली रसोई कारन छाक भई तब आं
आई ॥ पुनि आंगन ह्यौ गई मँजारी और बहु
मैं कुसुगुन पाई ॥ मोहि भये कुसुगुन घर पै
आजु कहा यह समुझि न जाई ॥ सूर स्याम व
गये आजु धौ वारवार बूझत नँदराई ॥ ३४ ॥

राग कानडा—उरगनारि यहै कहत परस्प
देखो यह बालककी बात ॥ विषज्वाला ज
जरत जमुनको याके तन नहिं लागत तात ॥ य
कछु जंत्र मंत्र है जानत अतिही सुंदर कोम
गात ॥ यह अहिराज महाविषज्वाला कितने कर
सहस फन घात ॥ छुवत नहीं तन जाके विष क
अबलौ बच्यो पुण्य पितु मात ॥ सूर स्यामसों दा
बचायो काली अंग लपेटत जात ॥ ३५ ॥

राग बिलावल—उरग गयो हरिको लिपटाई
कृत्य वचन कहि कहि मुख भाषत मोकों नी

त अहिराई ॥ लयो लपेटि चरणतें शिरलों
तेही हमसों करत ढिठाई ॥ चांपि लुकावत
ानी जुवती नीको नहीं सकत दिखराई ॥ प्रभु
ारजामी सब जानत अब डार्‌यो यह सकुच
ाई ॥ सूरदास प्रभु तन विस्तार्‌यो काली वि-
भयो तब जाई ॥ ३६ ॥

राग कानरो—जबै स्याम तन अति विस्ता-
॥ पटपटात टूटत अँग जान्यौ सरन सरन
हेराज पुकार्‌यो ॥ यह बानी सुनतहि करुणा-
तबै गये सँकुचाई ॥ यहै वचन सुनि द्रुपद-
मुख दीन्हो वसन बढाई ॥ यहै वचन गज-
सुनायो गरुड छांडि तहँ धाई ॥ यहै वचन
लक्षिग्रेहतें पंडौ जरत बचाई ॥ यह बानी
जाति न प्रभुपैं ऐसे परम कृपाल ॥ सूरदास
अंग सिकोर्‌यो व्याकुल देख्यो व्याल ॥३७॥

राग गौरी—जसुमति टेरति कुँवर कन्हैया ॥
दोखि कहति बलिरामहि कहां रह्यो तिर-
॥ मेरो भैया आवत अबही तोहिं दिखाऊं
॥ धीरज करो नेकु तुम देखो यह सुनि लेति

बलैया ॥ पुनि यह कहत मोहि परमोधत ध
गिरी मुरझैया ॥ सूरविना सुत भई सुध्याकुल
बाल कन्हैया ॥ ३८ ॥

राग नट–आवत उरग नाथ्यो स्याम ॥ नंद
सुदा गोप गोपिनि कहत है बलिराम ॥ मोर मु
विशाल लोचन श्रवण कुंडल लोल ॥ कटि पितं
वेष नटवर नृत्य फन प्रति डोल ॥ देखि देव बज
दुंदुभि सुमनगण वरषाई॥ सूर स्याम विलोकि
जजन मात पितु सुखदाई ॥ ३९ ॥

राग कानरो–फन फन प्रति नृत्यत नँदनंद
जलभीतर जुग जाम रहे कहुँ मिटो नहीं तन चं
न ॥ वहै काछनी कटि पीतंबर शीश मुकुट अ
सोहत ॥ मानौं गिरिपर मोर अनंदित देखत व्र
जन मोहत ॥ अमरथके अमर ललना सँग जै
धुनि तिहुँ लोक॥ सूर स्याम कालीपर निर्त्तत अ
वत है व्रजओक ॥ ४० ॥ गरुडत्रासतें इहांसु अ
यो ॥ तौ प्रभु चरणकमल फन फन प्रति अप
सीस धरायो ॥ धनि ऋषिशाप दयो खगपतिक
इहँ तव रहो छिपाई ॥ प्रभु वाहन उर भागि बच

हि नातर लेतो आई ॥ यह सुनि कृपा करी
नंदन चरणचिन्ह प्रगटाई ॥ सूरदास प्रभु अभै
तही उरग दीप पहुँचाई ॥ ४१ ॥

राग गौरी—व्रजवासिनसों कहत कन्हाई ॥
नातीर आजु सुख कीजै यह मेरे मन आई ॥
पेन सुनि अतिहरष बढायो सुख पायो नँदरा-
। घरघरतें पकवान मँगायो बालनि दयो पठा-
। दधि माखन अरु षटरस भोजन तुरतहिं ल्या-
जाई ॥ मातु पिता गोपी ग्वालनिकों सूर स्याम
द.ई ॥ ४२ ॥ तुरत कमल अब देहु पठाई ॥
हुं तात अब विलम न कीजै कंस चढै व्रजऊ-
आई ॥ कमल मँगाइ लये तट ऊपर कोटि
ल तब दयो पठाई ॥ बहुत विनै करि पाति
ई नृप लीजै सब पुहुप गनाई ॥ जैसी मोकहँ
ज्ञा दीजै बहुत धरे जलमांझ सजाई ॥ सूरदास
नृप प्रतापतें काली आइ गयो पहुँचाई॥४३॥

राग सोरठ—सहस शकट भरि कमल चलाये॥
ने सरके ओर गोप जे तिनके साथ पठाये ॥
ा दूध दधि माखन लै लै अहीर कांधे जोर ॥

नृपके हाथ पत्र यह दीजै विनती कीजै मोर ॥ मेरो नाम नृपतिसों लीजो स्याम कमल लै आयो॥ कोटि कमल आपुहि नृप मांगे तीनि कोटिसों पायो ॥ नृपति हमहि अपनो करि जानो तुम लाइक हम नाहीं ॥ सूरदास कहियो नृप आगे तुम्है छांडि कहँ जाहीं ॥ ४४ ॥

राग नटनारायणी—भीतर लीन्हे गोप बुलाइ ॥हृदय दुःख बहु हाल कीन्हो व्रजही दये पठाइ ॥ नंदको शिरपाउ दीन्हो गोप सब पहिराइ ॥ यह कह्यो बलिराम स्यामहि देखि हौं द्वौ भाइ ॥ अतिहि पुरुषारथ कियो उन कमल ल्यायो आइ ॥ सूर प्रभुको देखि हौं मैं एक दिवस बुलाइ ॥४५॥

राग धनाश्री—यह सुनि नंद बहुत सुख पायो ॥ कमल पठाइ दये नृप लीन्हे देखनकों द्वौ सुतन बुलायो ॥ सेवा बहुत मानि है लीन्ही व्रजनारी नर हरष बढायो ॥ बडी बात मै कमल पठाये मानि आपनो जल तो ल्यायो ॥ आनंदित करि जमुनातट व्रज खेलत बात द्यौस बहरायो ॥ इक सुख स्याम बच्यो कालीतें इक सुख कंसहि

कमल चलायो ॥ हँसत कान्ह बलिराम सुनत यह हमकों देखन नृपति मँगायो ॥ सूरदास प्रभु मातु पिताहित कोटि कमल दै व्रजहि बचायो ॥ ४६ ॥

राग कानरो—दावानल व्रजजनपर धायो ॥ गोकुल व्रज बृंदावन तृण द्रुम चाहत हैं चहुँ पास बचायो ॥ घेरत आवत दशहुँ दिशातें अति कीन्हे तन क्रोध ॥ नर नारी सब देखि चकित भे लगे दवा चहुँ कोध ॥ यह तौ असुर घात बहु कीन्हे आवत वचन समाज ॥ सूरदास व्रजलोग कहत यह उपज्यो दावा आज ॥ ४७ ॥ अबकी राखि लेहु गोपाल ॥ दशहुँ दिशातें उठी दुसह है दावा अग्नि उपजि बहु ज्वाल ॥ पटकत वास कास तृण चटकत लटकत ताल तमाल ॥ उटकत अतिअंगार फटत फल लपटत झपट कराल ॥ धूम धुनी बाढी अति अंबर चमकत उलमुख ज्वाल ॥ हरिन वराह मोर शुक सारस जरत जीव बेहाल ॥ जनि जिय डरौ नैन सब मूंदौ हँसि बोले गोपाल ॥ सूर अनल सब वदन समानी अभय किये नँदलाल ॥ ४८ ॥

राग सूहा—धेनु दुहत अति हरिहित बाढी ॥

एक धार दुहनी पहुँचावत एक धार जहँ प्य
ठाढी ॥ मोहन करतें धार चलावत मोहन
अतिहीं छबि बाढी ॥ मनु जलधार बरष
लघु पुनि पुनि चंद्र प्रेमपर काढी ॥ सखी सं
निरखत यह छबि हों व्याकुल मनमथकी दा
सूरदास प्रभु वस्य भई सब भवन चाढतें भई
चाढी ॥ ४९ ॥ क्यों हो कुबरि गिरी मुरझा
यह बानी कहि सखी आपनी आगे मोको
रोषाई ॥ चलीं लवाइ सुता वृषभानहि घरहं
समुहाई ॥ सूर सखिन मुख सुनि यह बानी
यह बात सुनाई ॥ ५० ॥

राग आसावरी—उसी हैं स्याम भुवंगम
मोहन मुख मुसुकानि मनो विष जात मेरसो
फुरै न मंत्र जंत्र गाढै नहिं चलै गुनी गुन ड
प्रेम प्रीति विषहर दँव लागी जारत है तन ज
निरविष नहीं होति कैसेहूं बहुत गुनी पचि
सूर स्याम गारूर विना को जो शिर गारू ढारे॥

राग धनाश्री—वेगि चलो पिय कुँवर क

कारन तुम यह वन ैयो सो तिय नाद भुवंगम
ई ॥ नैन सिथिल नासा जुत सीतल तपत अंग
सुधि न पराई ॥ सकसकात पट भीजि पसीना
लुटत तन जोर जम्हाई ॥ अनजानत पूरणको
कित उठी दोरी कछु जिन जो बताई ॥ ताहि
उपकार न लागत कर मीठे सहचरि
ताई ॥ तुम अश्विनीकुमार मनोहर यह औषधि
सखी लखाई ॥ सूर स्याम जो चहो जियायो
नेकुताके देहु दिखाई ॥ ५२ ॥

राग रामकली–लोचन दैवत कुँवारि उघारि॥
देखो नंदको तब सकुच अंग सह्यारि ॥ बात
जननिसों यह कहति है कह आजु ॥ मरततें
ती प्यारी फिरति है कहलाजु ॥ तब कह्यो
काल खाई कछू सुधि नहिं गात ॥ सूर प्रभु
याइ लीन्हो कह कुँवरिसों मात ॥ ५३ ॥

अथ चीरहरणलीला ।

राग सूहा–आजु कदम चढि देखत स्याम ॥
अभूषण सब हरि लीन्हे विना वसन जलभीतर

वाम ॥ मूंदे नैन ध्यान धरि हरिको अंतरजामी लीनो जात ॥ वारवार सवितासों मांगति हम पावै पति सुंदर गात ॥ जलतें निकसि आइ तट हेरत देख्यो चीर तहां कछु नाहीं॥ इत उत हेरि चकित भइ सुंदरि सकुचि गई जलभीतर माहीं ॥ नाभि प्रजंत नीरमैं ठाढी थरथर कँपत अंग सुकुमारी ॥ क्यौं लै गये वसन आभूषण सूर स्याम उर प्रीति विचारी ॥ ५४ ॥

राग धनाश्री–हमरो अंबर देहु मुरारी ॥ लै कारि चीर कदम चढि बैठे हम जलमांझ उघारी ॥ तटपर विनु वसनन क्यौं आवैं लाज लगति है भारी ॥ चोली हार तुमहिकों दीन्हो चीर हमैं दै डारी ॥ तुम यह बात अचंभो भाषत नांगे आवैं नारी ॥ सूर स्याम कछु छोह करो जियसी तंगे तन मारी ॥ ५५ ॥

अथ पनिघटलीला ।

राग टोडी–पनिघट रोक्यो आइ कन्हाई ॥ जमुनाजल कोउ भरन न पावै देखतही फिरि जाई॥ तबहि स्याम यक बुधि उपजाई आपुन रहे छिपाई॥

तट ठाढेते सखा संगके तिनको लियो बुलाई ॥ बैठारे ग्वालनको द्रुमतर आपुन फिरि फिरि हेरत ॥ बडी वार भैं कोउ न आई सूर स्याम मन खेलत॥५६

राग धनाश्री—व्रज छांडे कोउ चलन न पावत ॥ ग्वाल सखा लीन्हे सँग डोलत दै दै हांक जहां तहँ धावत ॥ काहूकी चुनरी फटकारत काहुकी गागरि ढरकावत ॥ काहूको गारी दै भाजत काहूको उठि अंग लगावत ॥ काहू नहिं मानत व्रजभीतर नंदमहरिको कुँवर कहावत ॥ सूर स्याम नट वर वपु काछे जमुनाके तट मुरलि बजावत॥५७॥

राग नट—राधा सखियन लीन बुलाइ ॥ चलहु जमुनाजलहि जैये चली सब सुखदाइ ॥ सबनि इक इक कलस लीनो तुरत पहुँची जाइ ॥ तहां देख्यौ स्यामसुंदर कुँवरि मन हरषाइ ॥ नंद नंदन देखि रीझे चितै रहि चितु लाइ॥ सूर प्रभुकी प्रिया राधा भरति जल मुसुकाइ ॥५८॥

राग गूजरी—घरहि चली जमुनाजल भरिकै ॥ सखियन बीच नागरी सोहै भई प्रीति उर हरिकै॥ मोहन को मोहनी लगाई सँगहिं चलेउ डारिकै ॥

वेनिकी छवि कहत न आवै रही नितंबनि धरिकै॥ सूर स्याम प्यारीके वसि भो रोम रोम रस भरिकै ॥ ५९ ॥

राग धनाश्री–सखियन बीच नागरी आवै ॥ छवि निरखत रीझे नँदनंदन प्यारी मनहि रिझावै ॥ कबहुँक आगे कबहुँक पाछे नानाभाउ बनावै ॥ राधा यह उनमान करै हरि मेरो चितहि चुरावै ॥ आगे जाइ कनक लकुटी लै पंथसि मार बतावै ॥ निरखत जहां छांह प्यारीकी तहँ लै छांह दुरावै ॥ छवि निरखत तन वारि आपनो नागरि जियहि जनावै ॥ अपने शिर पीतंबर वारत ऐसी हरि उपजावै ॥ वोढि वढनियां चलति दिखावति इहि मिसि निकटहि आवै ॥ सूर स्याम ऐसे मनभावन राधा मनहि रिझावै ॥ ६० ॥ काहूं तोहि ठगोरी लाई ॥ बूझति सखी सुन तनहि कैसिहुँ तोहि किधो ठग मूरि खवाई ॥ चौंकि परी सपने ज्यों जागी तब वानी कहि सखी सुनाई ॥ स्यामवरण इक मिलो ढिठोना तिनहीं कहँ मोहनी लगाई ॥ मैं जलभरि इतहीके आवति आइ अचानक अंक-

म लाई ॥ सूर ग्वाल सखियनके आगे बात कही सब लाज गँवाई ॥ ६१ ॥

राग बिलावल—अब तुम सांची बात कही ॥ एतेपर युवतिनको रोकत मांगत दान दही ॥ जो हम तुमहिं कहो चाहतहीं सो श्रीमुख प्रगटायो ॥ नीकी जाति उघारि आपनी युवतिन भले हँसायो ॥ तुम कमरीके ओढनिहारे पीतंबर नहिं छाजत ॥ सूर स्याम कारे तन ऊपर कारी कामरि राजत ॥६२॥ हार तोरि बिथराइ दयौ ॥ मैयासों कत कहन चली तुम दधि माखन सब छीनि लयौ ॥ रिस करि धाइ कंचुकी फारी अब तो मेरो नाउ भयौ ॥ काल्हि नहीं यहि मारग ऐहै ऐसो मोसों वैर ठयौ ॥ भली बात घर जाहु आजु तुम मांगत जोबनदानुलयौ ॥ सूरदास मुखही रिस युवतिन उर उर अंतर काम जयौ ॥ ६३ ॥

राग नट—काहेको कान्ह देत हौ गारी ॥ जो कोउ करै करे री हठ यौं मारग आवतही मारी ॥ भली करी दधि माखन खायौ चोली हार तोरि डारी ॥ जोबनदान कहूतें मांगत यह सुनि लाज-

न मारी ॥ होति अवार दूरि धरु है पै पैया लगों डरति भारी ॥ हमैं तुह्मैं यह कैसो झगरो सूर सुन हम गाउ गँवारी ॥ ६४ ॥

राग बिलावल—कहो कन्ह कह गथ है हमसों॥ जाकारन जुवती सब अटकी सो बूझति हैं तुमसों॥ लौंग दाख नारियर सुपारी कहला दे हम आवै ॥ हींग मिरच पीपरि अजवायनि ये सब वनिज कहावै ॥ कूटकै फरा सोंठि चिरैता कर जीरा कहुं देखत ॥ और मजीठ लाख सेंदुर कहुं ऐसिहु बुधि अब रेखत ॥ वाइ भिरंग वहेर हर्र कहूं वै लगोनि व्यौपारी ॥ सूर स्याम लरिकाई भूले जोवन भये मुरारी ॥ ६५ ॥ देखे दधिसुत दधिमैं जात ॥ एक अचंभो देखि सखी री रिपुमैं रिपु जु समात॥दधिपर कीर कीरपर पंकज पंकजके द्वै पात ॥ यह शोभा देख्यो सुफलकसुत फूले अंग समात ॥ सुंदर वदन विलोकि स्यामको नंद निरखि मुसुकात ॥ ऐसो ध्यान धरो जो हरिको सूरदास बलि जात ॥६६॥

राग सोरठ—नँदनंदन विनु कल न परै ॥ अति अनुरागे भीजि युवति सब जहां स्याम तहँ चित्त

हरै ॥ भवन गई मन तहां न लागै गुरु गुरुजन अति त्रास करै ॥ वे कछु कहै करै कछु और सासु ननँद तिनपर झहरै ॥ यहै तुलै पितु मातु सिखायौ बोल करत नहिं रिसन जरै ॥ सूरदास प्रभुसों उरझो यह समुझै जीय ज्ञान धरै ॥ ६७ ॥

राग सारंग—हम अहीर ब्रजवासी लोग ॥ ऐसे चलौ हँसै नहिं कोऊ घरमें बैठि करो सुखभोग ॥ दही मही माखन घृत बेंचो सबै करो अपने उत जोग ॥ शिरपर कंस मधुपुरी बैठो छिनकहिमें करि डारै सोग ॥ फूली घरनि पाउ अब धारौ लागे तुम सब कारण जोग ॥ सुनहुं सुरत वही जानौगे जब देखो राधा संजोग ॥ ६८ ॥

राग इमन—मैं बलि जाउँ कन्हैयाकी ॥ करतें लकुट डारि उठि धायो बात सुनी वनगैयाकी ॥ धोरी गाइ आपनी जानी उपजी प्रीति गवैयाकी ॥ तातों जल समोइ पग धोवत स्याम देखि हित मैयाकी ॥ यह सुख सूर और कहुँ नाहीं सोंह करत बलभैयाकी ॥ ६९ ॥

राग सोरठ—राधा डरडरात घर आई॥ देख-तही कीरति महतारी हरषि कुँवरि उर लाई ॥ धीरज कियो सुता माता जिय दूरि कियो मन सोच ॥ मेरी कही मैया मन त्रासी कहा कियो यह पोच ॥ ले री मैया हार मुतसरी या कारण मुहिं त्रासी ॥ सूर राधिकाके गुण ऐसे मिलि आई अविनासी ॥ ७० ॥

राग आसावरी—स्याम भये वृषभानु सुतावस और नहीं कछु भावै हो ॥ जो प्रभु तिहूं भुवनको नायक सुर मुनि अंत न पावै हो ॥ जाको शिव ध्यावत निश वासर सहसानन जिहि गावै हो ॥ सो हरि राधावदनचंदको दृग चकोर तरसावै हो ॥ जाकों देखि अनंग अनंगित नारि छबिहि भरमावै हो ॥ सूर स्याम स्यामासँग ऐसे जो सब छांडि लगावै हो ॥ ७१ ॥

राग बिहागरो—मोतें यह अपराध परो ॥ आये स्याम द्वार भे ठाढे मैं अपने जिय गर्भ धरो॥ जानि बूझि मैं यह कत कीन्हो सो मेरे हिय शीस परो ॥ मन अपने ढिगही मैं मूस्यो बारहि बार

लरो ॥ मैं अति विमुख रहै ये सनमुख नीके उन-हि ढरो ॥ सूरदास मनु आप स्वारथी अपनो काज सरो ॥ ७२ ॥ मन जो कह्यो करे री माई ॥ तेरी कही बात सब होती मिलिहि उनहिको धाई ॥ निलज भई सुधि बुधि विसराई गुरुजन करत ल-राई॥ इत कुलकानि उते हरिको रस मन अति आपु डराई ॥ आप स्वारथी सबै देखियतु ए मो कहँ दुखदाई ॥ सूरदास प्रभु चितै आपनो तन कहि गयो रिसाई ॥ ७३ ॥

राग बिलावल—भूल नहीं अवमान करो री॥ जाते होइ अकाज आपनो काहे वृथा मरो री ॥ ऐसे तनमैं गर्भ न राखो चिंतामणि विसरो री ॥ ऐसी बात लरै अब कोऊ ताके संग लरो री ॥ और जु पंथ चलै कह सरि है स्यामहि संग फिरो री ॥ सूर स्याम जो आपु स्वारथी दरसन नैन भरो री ॥ ७४ ॥

राग टोडी—ललिता मुख चितवन मुसकानि॥ आजु हँसी पिय मुख अवलोकत दुहूं मनहिं मन जानि ॥ अति आतुरहि धाइकै आई काहे वदन

दुरावै ॥ पूंछत है पुनि नंदनँदन चित बातन नैन चुरावै ॥ तब बोली कहि चतुर नागरी अचरज कथा सुनाऊं ॥ सूरस्याम जो चले तुरतही नैनन जाइ दिखाऊं ॥ ७५ ॥

राग सारंग—अद्भुत एक अनूपम गाम ॥ जुगुल कमलपर गजवर क्रीडत तापर सिंह करत अनुराग ॥ हरपर सरवर सरपर गिरिवर गिरिपर फूले कंजपराग ॥ रुचिर कपोत वसत तिहिं ऊपर तहां अरुण अमृत फल लाग ॥ फलपर पुहुप पुहुपपर पल्लव तहां रहत पिक शुक मृग काग ॥ खंजन धनुष चंद ताऊपर तहां वसत है मणिधर नाग ॥ यह रस विरस होत नहिं कबहूं सोभा तहां करत नहिं त्याग ॥ सूरदास प्रभु नित विहारतें वाढौं रतिपति सिंध सुहाग ॥ ७६ ॥

राग नट—भुज भरि लई हिरदे लाइ ॥ विरहव्याकुल देखि बाला नैन द्वौ भरि आइ ॥ रैनि वासर बीचही मैं द्वौ गये सुरझाइ ॥ मनोवृछत मालवेली कनक सुधा सिंचाइ ॥ हरखि डह डह

मुसकि फूले प्रेम फूलन लगाइ॥ सूर प्रभुकी स्याम स्यामा त्रिविध ताप नसाइ ॥ ७७ ॥

राग रामकली—ललिता प्रेमविवस भइँ भारी॥ वह चितवनि वह मिलनि परस्पर अति शोभा वनवारी ॥ इकटक अंग अंक अवलोकत उत वस भये विहारी ॥ वह आतुर छबि लेत देत यक यक देख्यौ छबि प्यारी ॥ सुनहुं सूर ज्यों होम अग्नि छत तेहूतें यह न्यारी ॥ ७८ ॥

राग केदारो—यद्यपि राधिका हरिसंग ॥ हाउ भाउ कटाक्ष लोचन करत नाना रंग॥हृदय व्याकुल धीर नाहीं वदन कमल विलास ॥ तृषामें जलनाम सुनि ज्यौं अधिक उपजै प्यास ॥ स्याम रूप अपार इत उत लोभ पुट विस्तार ॥ सूर गति नहिं लेत कोउ दुहुन बलि अधिकार ॥ ७९ ॥

राग विभास—ललिता संग सखिनको लीने ॥ दंपति सुख देखत अतिपावत यकटक लोचन दीने ॥ प्यारी स्याम अंगकी शोभा निदरे देखौ चाहति ॥ उत नागरि नागर नैननिको निडर रूप अवगाहति ॥ अति उदार शोभाकी सीवां इत

लोभै नाहिं पार ॥ सूरस्याम अँग अँगकी सोभा निरखत वारंवार ॥ ८० ॥

राग बिलावल—धन्य कान्ह धनि राधा गोरी॥ धनि यह भाग सुहाग धन्य यह धन्य नवल नवला नव जोरी ॥ धनि यह मिलनि धन्य यह बैठनि धनि अनुराग नहीं रुचि थोरी ॥ धनि यह अरस परस छबि लूटनि महाचतुर मुख भोरी ॥ प्यारी अंग अंग अवलोकति पिय अवलोकन लगत ठगोरी ॥ सूरदास प्रभु रिझे नगरि गागरि पर डारत तृण तोरी ॥ ८१ ॥

राग धनाश्री—नागरिपर छबि रीझे स्याम ॥ कबहुंक वार तहै कर मुरली कबहुंक वारत मोहन नाम ॥ निरखि रूप सुख अंग लहत नहिं तन मन वारत पूरणकाम ॥ इनको पलक वोट नहिं करि हौं मन यह कहत वासरहु जाम ॥ वारहिवार सिहात सूर प्रभु देखि देखि राधा श्रीवाम ॥ ८२ ॥

राग सूहाबिलावल—स्याम निरखि प्यारी अँग अंग ॥ सकुचि रहत सुख तन नाहिं चितवत जिहि वस रहत अनंत अनंग ॥ चपल नैन दीरघ

अनियारे हाउ भाउ नाना गति रंग ॥ वारो मीन कोटि अंबुजगन खंजन वारो कोटि कुरंग ॥ लोचन नाहिं ठहरात स्यामके कबहुँ नैन सुख अंग सुरंग ॥ सूरदास प्रभु पियहि पियारी ज्यों वस डोरि फिरत सँग चंग ॥ ८३ ॥

अथ वंशीबजावनलीला।

राग नट—तिहारि स्याम मुरली मनेंक बजाऊं ॥ जैसी तान तुम्हारे मुखकी तैसी मधुर सुनाऊं ॥ जैसी आपु अधर धरि फूंकत मैं अधरनिपर साऊं ॥ हाहा करति पांइ लागति हौं वा सब सुरिया पाऊं ॥ सारंग नट पूरबी मिलैं कै राग अनूपम गाऊं ॥ तुम्हरे निज भूषण मैं पहिरों अपनि तुम्है पहिराऊं ॥ तुम बैठो दृढ मान साजिकै तुमही चरण मनाऊं ॥ सूरस्याम गिरिधरण छबीले भुजभरि कंठ लगाऊं ॥ ८४ ॥

राग गुर्जरी—मुरली लई करते छीनि॥ ता समैं कहि जाति छबि नाहिं चतुर नारि न वीनि ॥ कहति पुनि पुनि स्याम आगे मोहि देहु सिखाइ ॥

मुरलि पर मुख जोरि दोऊ अरस परस बजाइ ॥ कृष्ण पूंछत नाद उछलत प्यारि रिस करि गात ॥ वारवारहि अधर धरि धरि बजत नहिं अकुलात ॥ प्रिया भूषण स्याम पहिरत स्याम भूषण नारि ॥ सूर प्रभु करि मान बैठे करति तिय मनुहारि ॥ ८५ ॥

राग सारंग—प्यारी कर बांसुरी लई ॥ सन्मुख ह्वै तुम सुनहु रसिक प्रिय पिय ललित त्रिभंग भई ॥ उठत राग रागिनी तरंगनि छिन छिन उपज नई ॥ आलवाल नँदलाल श्रवणपर जनु मोहनी बई ॥ नमित सुधाकर वदन अमित छबि मनमोहन चितई ॥ मनहुँ चकोरनि मति मचकै मृग तन सुधि विसरि गई ॥ कर पीतंबर नाथ छांह करि अलिबलिकै रिझई ॥ सूर सखी हँसि कमलनैन पर राधा अंक दई ॥ ८६ ॥

राग धनाश्री—नागरि हँसति हृदय उर भारी॥ कबहुँ अंक भरि लेत उरज बिच कबहुं करत मनुहारी ॥ मानु करत नीके नहिं लागो दूरि करो यह ख्याल ॥ नेकु नहीं चितवत राधातन निठुर

भये नँदलाल ॥ शीश धरति चरणन लै पुनि पुनि तियको रूप निहारि ॥ सूरदास प्रभु मान धरो दृढ तब धरि नखन विदारि ॥ ८७ ॥

राग कानरो—मनही मन रीझति है राधा वारवार पिय रूप निहारी ॥ निरखत भाल बिंदु सेंदुरको वा छबिपर तन मन धन वारी ॥ यह हम कहत सखी जनि बूझौ बूझे कहा करै हौ ॥ तिहूं भुवन शोभा सुखकी निधि कैसे उनहि दुरै हौ ॥ पग नेवर बिछुवनिकी झमकनि चलत परसपर बाजत ॥ सूर स्याम स्यामा सुख जोरी मनि कंचन छबि लाजत ॥ ८८ ॥ स्यामा स्याम कुंजवन आवत ॥ भुज भुज कंठ परस्पर लीन्हे यह छबि उनहि न पावत ॥ इततें चंद्रावली जोति व्रज उततें ए द्वौ आये ॥ दूरिहितें चितवत उनहीं तन यकटक नैन लगाये ॥ यक राधा दूसरी कौन है याको नहिं पहिचानो ॥ व्रज वृषभान पुरी युवतिनको तुम इनको नहिं जानो ॥ यह आई कहुँ ओर गाऊतें छबि सांवरी सलोनी ॥ सूर स्याम यह नई बताई एकहि अंगनि लोनी ॥ ८९ ॥

राग गौरी—यह वृषभान सुता वह को है ॥ याकी सरि जुवती कोउ नाहीं यह त्रिभुवन मन मोहै ॥ अति आतुर देखनको आवत निकट आइ पहिचानो ॥ व्रजमैं रहति किधौं कहुँ औरो बूझेतें तव जानो ॥ यह मोहनी कहाते आई परम सलोनी नारी ॥ सूर स्याम देखत मुसक्याने करी चतुरई भारी ॥ ९० ॥

राग आसावरी—सकुच छांडि अब इनहि जनाऊं ॥ एते चलो आपने काजे कहै नहीं समुझाऊं ॥ मनही मन यह जीति जाहिंगे जानि बूझि न डराऊं ॥ बडे गुणज्ञ कहावत दोऊ इनको लाज लजाऊं ॥ सूर स्याम राधाकी करनी महिमा प्रगट सुनाऊं ॥ ९१ ॥ पाहुनी कर दे नेक मह्यौ ॥ हौं अटकी गोपाल रसोई जसुमति विनै कह्यौ ॥ तिरछे ह्वै निकसे नँदनंदन चित उत अरुझि रह्यौ ॥ रीती रई मथनियां घूमै भूमै कुरै दह्यौ ॥ ठाढे हँसति नंदकी रानी गोरस फिरत बह्यौ ॥ सूरदास प्रभु मिलनि आजुकी दुहुन सकोच सह्यौ ॥ ९२ ॥ लग्यो स्याम कर पीठि दही री ॥ मानहु स्याम

शैलते निकरी गोपद संयुत प्रगट अहीरी ॥ अक्ष विवर ह्वै हृदय समान्यो विकल बाल तन सुधि न रही री ॥ मुख प्रसेद पेरी परिआई धाइ सखिन मिलि सबन गही री ॥ धाइ धाइ गारुडी बुलावति आवति लहरि न जात कही री ॥ मंत्र न फुरै जंत्र नहिं लागे स्यामभुवंगम सूर सही री ॥९३॥

राग सुघराई—अइ लालन जामिनि जागै भोर ॥ नील कलेवर कोमल ऊपर गडि गये कुच जु कठोर ॥ निज वसवस्य भये भामिनिके उठि आये वहि ठोर ॥ सूरदास प्रभु वचन बनावत अति चोरत चितचोर ॥ ९४ ॥ भोर भये मुख देखि लजाने ॥ रातिहि केलि सुख सिंचत शोभित अरुन नैन अलसाने ॥ अंजस रेख बनी अधरनिपर नैन कपोल पीक लपटाने ॥ मनो कंज ऊपर बैठे अलि उडि न सकत मकरंद लोभाने ॥ है हिय हार अलंकृत विनगुन आइ सुरति रन जीति सयाने ॥ सूरदास प्रभु पाइ धारिये जानत है पर हाथ विकाने ॥ ९५ ॥

राग कानरो—सुनि प्यारी राधिका सुजान ॥

कहि धौं कोन काज सरि है री यह झूठो अभिमान ॥ जाके चरण रमापति लाजत तव गुण रूप निधान ॥ तिनके मुखके वचन मनोहर सो तू करति न कान ॥ परम चतुर सुंदर सुखकारी तोसो तिय नाहिं आन ॥ कीजे कहा कृपणकी संपति विनाभोग विन दान॥ ऐसी विथा होति निशि हरिको जनि हठ करै विहान॥ नाहीं कढत ओरके काढे सूर मदनके बान ॥ ९६ ॥ लाल निठुर ह्वै बैठि रहे ॥ प्यारी हां हां करत मनावत पुनि पुनि चरण गहे ॥ नांही बोलत नांही चितवत मुख तन धर निक रोदत ॥ आपु हँसत फिरि फिरि उर लागत चक्रित होत मुख जोवत ॥ कहा कहे ऐ बोलत नाहीं पिय यह खेल मिटावहु ॥ सूरस्याम मुखचंद कोटि छबि हँसिकै मोंहि दिखावहु॥९७॥ दधि बेंचत व्रजगली फिरै॥ गोरस लै लालन बुलवावत कोऊ सुधि ताकी न करै ॥ उनकी बात सुनत नहिं श्रवणनि कह कहिये ये घरनि जरै ॥ दूध दही इहँ लेत न कोऊ प्रातहिते शिर लै हहरै ॥ बोलि उठी पुनि लेहु गुपालहि घर घर लोकलाज निडरै ॥ सूर स्यामको

रूप महारस जाके बल काहू न डरै॥ ९८॥ मुख छबि देखु री नँदघरनि ॥ सरदनिसुके अंग अंगनि इन्दु आभा हरनि ॥ ललित श्रीगोपाल लोचन लोल आंसू ढरनि ॥ मनहुँ वारिज बिलखि विभ्रम परे परवस परनि ॥ कनक माणिमय मकर कुंडल जोति जगमग किरनि ॥ मित्र मोचन मनहुँ आए तरल गति द्वौ तरनि ॥ कुटिल कुंतल मधुप मिलि मनु कियो चहत लरनि ॥ वरन कांति विशाल शोभा सूर क्यों सक वरनि ॥ ९९ ॥

राग सोरठ—जाको ब्रह्म अंत नहिं पावै॥ ताको नंदकि रानि जसोदा घर घर टहल करावै ॥ शेष सनक नारद गणेस मुनि जाको गुन नित गावै ॥ निशि वासर खोजत पचिहारे मनसा ध्यान न आवै॥ धनि धनि गोकुल धनि व्रजवनिता निरखत स्याम बँधावै ॥ सूरदास प्रभुकी महिमा यह संतन दरस दिखावै ॥ १०० ॥

राग सारंग—ऊधो मनु तो नहिं दस बीस॥ एक हतो सो गयो हरिके सँग को राखै जगदीस ॥ भई सिथिल सब माधो बिनि ज्यों देह बिना त्यों

सीस ॥ स्वासा अटकि रही आसा लगि जीजै कोटी वरीस॥तुम तौ सखा स्याम सुंदरके सकल जोगके ईस ॥ सूरदास स्वारथकी बतियां को पुजवै वह रीस ॥१०१॥ हरि काहेके अन्तरजामी ॥जो नाहिं वै आये इहि अवसर अवध बतावत लामी ॥ कीही प्रीति पुहुप मधुकरकी अपने काज सकामी ॥ ते क्यौं पीर पराई जाने जे खगपतिके गामी॥ लाई प्रीति प्रगट कलईसी जैसी आ मिलि आमी ॥ सूर इते पर अनख मुरति हौं ऊधो पीवत मामी ॥ ॥ १०२ ॥ ऊधो जोग किधो यह हांसी ॥ कीही प्रीति हमारे व्रजसो दई प्रेमकी फांसी ॥ तुम तो बडे जोगके पालक संग लिये कुबिजासी ॥ सूरदास सोई पै जानत जा उर लागत गांसी ॥ ॥ १०३ ॥ कहो तो जो कहिवेकी होई ॥ प्राणनाथ बिछुरे की वेदनि जानत नाहिं न कोई ॥ जो हम अधर सुधारस लै लै रही मदनगति भोई ॥ कहा कहों कछु कहत न आवै तन मन रही समोई ॥ विरहविथा वेदनि उर अंतर जामें जानै सोई ॥ सूरदास सनकादिक लोभी सो हम बैठी

खोई ॥ १०४ ॥ ऊधो जाके माथे भागु ॥ विल-
खत रहत सकल व्रजवनिता चेरी चपरि सुहागु ॥
आइ जोगकी वेलि बढावन काटि प्रेमकी वागु ॥
दासीते पटरानी कीनी महिमा देत विरागु ॥ भलो
सुहावन साधु बनो है राजहंस अरु कागु ॥ निलज
भये अब खेलत दोऊ बारहमासी फागु ॥ लोंडी
की डोंडी बाजी है हांसी अरु अनुरागु ॥ सूरदा-
सको यहै अचंभो चतुर विचोरत आगु ॥१०५॥

राग नट—ऊधो तुम व्रज पैंठि करी ॥ लै आ-
ये हौ नफा जानिके सबै वस्तु अकरी ॥ हम अहीर
माखनु मथि बेचैं यहै टेक पकरी ॥ यह निर्गुण
निर्मोल कुलट री अब किन करत घरी ॥ यह
व्योपार उहां जु समातो हती बढी नगरी ॥ सूर-
दास गाहक नहिं कोऊ दिखियतु गरे परी॥१०६॥

राग सारंग—ऊधो अब कछु कहत न
आवै ॥ शिरपर सौति हमारे कुबिजा चामके
दाम चलावै ॥ तब तो चेरी कंसराइकी अब
लागी कुलवधू कहावै ॥ ज्यौं नट कर गहि लेत
लकुटिया कपि कहँ नाच नचावै ॥ कछुवै मंत्र

कियो चंदनमैं जाते स्यामहि भावै ॥ आपु नहीं रँग रँगी स्यामरस शुक ज्यों बैठि पढावै ॥ हमसों वय रु हेतु कुबिजासो लिखि लिखि जोग पठावै ॥ सूरदास प्रभु अतिहि निडर भै इतरे जरे पर लोनु लगावै ॥ १०७ ॥ मीठी बातनमें कह लीजै ॥ जो मैं बेहार होइ हमारे करन कहै सोइ कीजै ॥ जिन मोहन अपने कर कानन करणफूल पहिराये ॥ तिन मोहन माटीके मुद्रा मधुकर हाथ पठाये ॥ एक दिवस वृंदावन मोहन रचि पचि विविध बनाई ॥ १०८ ॥

अथ द्रौपदीवस्त्रहरन ।

इत उत देखि द्रौपदी हेरी ॥ ऐंचत चीर हँसत कौरव सुत त्रिभुवननाथ सरण हौ तेरी ॥ सर्वसु दै अंबर तन बांच्यो सो पति जाति रहति नहिं मेरी॥ क्रोधवंत देखित कौरव कुल मानहुँ मृगी सिंह वन घेरी ॥ गहे दुसासन केस सभामैं परवस ज्यों लै आये चेरी ॥ पांडो सब पुरुषारथ छांडो बांधे वचन कपटकी वेरी ॥ हा जदुनाथ द्वारिकावासी जुगजुग भक्ति आपदा फेरी ॥ वसन प्रवाह बढचौ

सूरज प्रभु आरत वचन कहे तब टेरी ॥ १०९ ॥

राग नट–अब कछु नाहीं नाथ रह्यो ॥ सकल सभामैं हठी दुसासन अंबर आनि गह्यो ॥ हारी भूमि भँडार सर्व सुख अरु वनवास सह्यो ॥ हा जगदीस राखि यहि औसर प्रगट पुकार कह्यो ॥ सूरदास प्रभु उमँगि सिंधु ज्यों वसन प्रवाह वह्यो ॥ ११० ॥

राग बिलावल–मैं अनाथके नाथ हरी ॥ ब्रह्मादिक नारद सनकादिक जिहिं समाज नहिं ध्यान टरी ॥ बूडत अंग थाह नहिं पायो दुःशासन दुखसिंधु भरी ॥ भक्तवछल प्रभु नाम सुमिरिके या कारण मैं सुमिरि खरी ॥ भीषम करण द्रोण असुथामा शल्यसहित कहुँ सीस तरी ॥ महावीर सब देखत ठाढे केस गहत कहुँ धरण करी ॥ त्राहि त्राहि द्रौपदी पुकारी गई अवाज वैकुंठ परी ॥ सूरस्याम धों कहा दिखति हौ पुनि कह करि हौ वसन हरी ॥ १११ ॥ द्रौपदी हरिसें टेरि कही ॥ तुम जनि सहो नंदके नंदन मैं जिहि भांति सही ॥ मो पति पांच पांचके पति तुम सो पति

कहा रही ॥ भीषम करण द्रोण ढिग मैं दुःशासन बांह गही ॥ लेत उसास निरास सभामैं फाटि कि न जाति मही ॥ सूरदास प्रभु आइ गए तहँ वसन प्रवाह वही ॥ ११२ ॥

राग सोरठ—राधा छिरकत छीट छबीली ॥ ऊंचे कुच कंचुकि बँद छूटे लटकि रही लटकीली ॥ रच्यो खेल यमुना जलभीतर प्रेम न मुदित सुसीली ॥ स्यामग्रीव राधा भुजऊपर जनु दामिनि घन मीली ॥ चंदन गात तटंक श्रवणकोर तन जटित मनि नीली ॥ गति गयंद मृगनायक कटिपर सोहत किंकिनि ढीली ॥ वरषत सुमन देव अंबर झरि तिय गावति है जीली ॥ सूरदास स्वामीके विहरत यमुन तरंगिनि भूली ॥ ११३ ॥ तजो मन हरिविमुखनको संग ॥ जाके संग कुमति मति उपजत करत भजनमें भंग ॥ कागहि काह कपूर चुगाये सो न अह्नाये गंग ॥ स्वरको कहा अरगजा लेपन मरकट भूषण अंग ॥ संगति कहा असाध साधकी जहँ तुलसी तहँ भंग ॥ पेलि पाषान वान नहिं भेदै रीतो रह्यो निषंग ॥ काह भयो पै

पान कराये विष नहिं तजत भुअंग ॥ सूर सुभाय कामरी कारी चढत न दूजो रंग ॥ ११४ ॥ किते दिन हरि सुमिरन विखोए॥ परनिंदा रसनाके र... अपन परतर गोए ॥ विविध प्रकार कियो बहु मरदन मलि मलि वस्तर धोए ॥ तिलक बनाइ चले स्वामी ह्वै विषयनके मुख जोए ॥ जग जहाज देखे सुर कंपे नारदसे मुनि रोए ॥ सूर अधमकी कहो कौन गति उदर भरे पर सोए ॥ ११५ ॥ अपनपौ आपुहिसो बिगर्‌यो ॥ जैसे स्वान कांचके मंदिर भ्रमि भ्रमि भूंकि मर्‌यो॥ ज्यों केहरि अपि निरखि कूप जल प्रतिमा देखि गिर्‌यो ॥ मरकट मूठि छांडि नहिं दीन्ही कहु कोने पकर्‌यो ॥ ज्यों कुरंग गति जानि आपनी निस दिन भ्रमत फिर्‌यो ॥ ऐसे नरके निकट नरायण कबहु न बूझि पर्‌यो ॥ ज्यों गज उन्मद फटिकशिलामैं दशनन जाइ अर्‌यो ॥ सूर-दास ललनीको सुवना काहू कोने पकर्‌यो॥ ११६॥ काहूं फिरि न कही वे बातें ॥ जे नर सुकृत गए करि ह्यांते ता पथकी कुशलातें ॥ जैसे सती जरै पियके सँग प्रेम प्रीति रसमातें ॥ वाको स्वाद

बूझिऐ कासों सीरे जरीकी तातें ॥ जैसे सूर धसत रनभीतर लाल चलो भलु भातें ॥ वाको सुजस बूझिऐ कासों शेलै सही किसातें ॥ जैसे वीर जलते आवत जलही बीच विलातें ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस विनु आवागवन कहातें॥ ११७॥ ते नर इतके भये न उतके ॥ उत नहिं भक्ति करी माधवकी इत नहिं नारी सुतके ॥ घरते निकरि कहा उन कीन्हो दर दर भिक्षा मांगी ॥ सूरतिसिंह चालु भेडीकी साधु भएकी स्वांगी॥ माला करमें सुरति न हरिमें यह सुमिरण कहु कैसा ॥ ऊपर छाप तिलक घँसि दीन्हो अंतर पैसा पैसा॥ तन मूंडचो पै मन नहिं मूंडचो अनहद चित नहिं दीन्हा ॥ सूरदास भगवंत भजन विन तिन जगमैं कह कीन्हा ॥ ११८ ॥ ऊधो हरिसो भलो जो पति सीताको ॥ जायाकाज जतन बहु कीन्ही समुद कियो बीताको ॥ लंका जारि रावणै मार्‌यो मुख दीख्यो भीताको॥ उन तो यह सँदेस लिखि पठयो ज्ञान करो गीताको ॥ सेज परे सातों सुख बीते ज्यों पीता चीताको ॥ सूर सुकृतकी का जानै यह तसकर नौनी ताको ॥

॥ ११९॥ सँदेसन मधुवन कूप भरे॥ जे ते पथिक गए मधुवनको तेऊ नाहिं फिरे॥ अपना तौ पटवत नाहिं मोहन हमरे हू न फिरे॥ कीवै स्याम सखा बनि बैठे की चलि पंथ मरे॥ कागद गरे किधौ मसि खोटी सरको अमल जरे॥ सेवक सूर लिखनको अँधरो नैन कपाट घिरे॥ १२०॥ ऊधो जनि कहु ठकुर सुहाती॥ हमै तुमै अब नातौ कैसो बीच बनावत पाती॥ हम अपनो कीन्हो फल पायो समुझि रहव दिन राती॥ जो उनको वैराग जानती ना उन हाथ बिकाती॥ असि परपंच बहुत हम देखे कित विहरावत छाती॥ कहाक जोग लै आयो ऊधो उनविन जोग किमाती॥ सूरदास दुख तबही मिटि है स्याम लगावत छाती॥ १२१॥

राग रेखता—सरजूनदीके तीर कुँवर सांवरो खडा॥ पनियां भरनको जाति थी शिरपर लिये घडा॥ अचानको मैं काकरो मिरी नजरि पडा॥ सोहै वदन वसंती कर नीक नीकडा॥ उसके सोहै गले हार जवाहिरो जडा॥ वाके अदा वदनसे

दिल्में मिरे गडा ॥ सूरकों मैं काकरो दरबारमें अडा ॥१२२॥ होरि खेलत बाल गुपाल लालसों मुख मूंदे मन खोलै ॥ घूपट वोट वदन राजत मनो विधु बादरके ओलै ॥ चिकने चिहुर छुटे वेनीते नील वसन मिलि डोलै ॥ मानो कुटुमसहित काली कालिंदी करत कलोलै ॥ वेसरिको मोती अति-राजित मुखछवि देत अतोलै ॥ मानो नूत मंजिरी लैकै कीर करत मरगोलै ॥ बहू मीसरेस ह्वैके सब गोपी अपने अपने टोलै ॥ मोर किसोर कोकिला कूकै मनहु विहंगम बोलै ॥ वृंदावनमें रहस रचो है संग सखा लिय डोलै ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस-को हौं विरहिनि अनबोलै ॥१२३॥ होरी खेलन आईं आजु आईं ॥ वरसाने गोकुलकी नारी अपने पति सब तजि तजि धाईं ॥ यक चन्दन वंदन रँग ल्याई अबिर गुलाल लये उठि धाईं ॥ अंचलकी ढालै मुख ऊपर नैन किसानन वान चलाईं ॥ इत राधे गोपिन सँग डोलै उतै ग्याल छांडै पिचकाईं ॥ ऐसी मारु परी है परसपर नंदपौरि अरु जमुना ताईं ॥ घेरि लियो गोकुल चहुँ वोरनि हरिहि पक-

रिवे कोलाहल गाई॥ ग्वाल बाल सब भये है द्वि-
चित्ते ललिता गई झलबलको ल्याई ॥ आपु चतुर
वस भये अबलनके भूलि गई सिगरी चतुराई ॥
मन मानेते गुलिचा दीजे हरि द्वौ हाथनि हां हां क-
राई ॥ वृंदावनमें रहस रचो है चाचरि खेलत
कुँवर कन्हाई ॥ सूरदास प्रभु गोपिन लूट ले
गहु गुहारि गुपाल गुसाई ॥ १२४ ॥ तू जनि
जारि उतै चित चाहन ॥ तेरी कही न रही
कछु आलि री मेरी कही क्यों न मानत काहे न ॥
जौ लगि रूप गहेरहु तौ लगि नेकु निहारत ताहन ॥
तोहि भरोस रोस अपनेको वे हँसिकै पघिलावत
पाहन ॥ जे न लखी कबहूं शशि सूरज ते निकरी
गृहते दरसाहन ॥ कानन जाइँ मिली सुनि कानन
बांसुरिया तजि लाज उछाहन ॥ ओऊ छके छबि
छैल विलोकत बावरी बैल कियो जिन वाहन ॥
जुगुल धीर हरि लेत हियेकी पीर न जानी अहीरको
आहन ॥ १२५ ॥ आई री नई नोखि अहीरी ॥
काहेकों रारि बढावत मोसों तोसों वार हजार
कही री ॥ बैठि रहो गृह काहिकों आवत कोमल

चरण कठोर मही री ॥ मैं हठ दान लियोइ चहतु हौ तू हठ दानकी टेंक गही री॥ जुगुल सखी वृषभानुनंदिनी कबहुं न काहुकी बात सही री ॥ १२६॥ नंदको नँदन विदरदा है ॥ कोन करी अस घायल मायल लोयनको पन करदा है॥ चीरा जरित शिर ललित लपेटा फेंटा बांधे जरदा है॥ ताऊपर कलँगी अतिराजत निरखित राखी परदा है ॥ गोभारूप सकल शोभाको सदन वदन ससि सरदा है॥ कुंडल झलकि छबि छलकि अखंडित फविमंडित गो गरदा है ॥ ये सब मोहि कहा भयो तोही तूं जो भई रंग हरदा है ॥ जुगुल लगी सँग सांवलियाके ज्यों पांसे लगि नरदा है ॥ १२७ ॥ श्रीवृंदावन रानीकी जै बोलो ॥ नेमसहित निज छेम करणको प्रेममँजूसा गहि खोलो ॥ तू हिय बीच अपीच पिया पिय दीहै दरस टारी बोलो ॥ अंसन बाहु लाहु लोचन फल ले मन मूढ मान जोलो ॥ छाइ रही छबि वदन छपाकर कुटिल अलक कुंडल लो लो॥ छुवत कपोल उवत सोभा लखि हाथ बिका नीवी निमोलो ॥ नंदनँदन वृषभाननंदिनी रटत रहो रस न।

तोलो ॥ दीजै जुगुल जुगुल जन जाचत यह मेरी मति मति डोलो ॥ १२८॥ काहेको रारि बढावत बातन ॥ सो सुनि श्रवण भवन गहि मोहन जानत जोन तिहारी घातन ॥ जाहु जू जाहु चले घर घालन मेरे गरे तुलसीके पातन ॥ जाइ कहों कर-तूति तिहारि तो माइ रहै अंगुरी दै दांतन ॥ कुंडल अलक पखा शिर मोरके मोहे चषण लषण जल-जातन ॥ तन घनस्याम पीतपट है छलछंद भरे सब गातन ॥ ऐंडई डोलत ऐंडई बोलत धारि लियो गिरि जो दिन सातन ॥ जुगुल भयो बलवीर महाबल पालि हमरेई दूध औ भातन ॥ १२९ ॥ मैं कब फोरि गागरिया छबि आग-रिया पनिहारी॥ तै मिरि डोरि तोरि चकईकी ता-ऊपर दै गारी ॥ चितवत अनत चलत कहुँ अनतैं जोवन मदमतवारी ॥ घूमि घूमि पग परत भूमिमैं मैं लइ आनि सँभारी ॥ गहि लीनी वनमाल न मानति ठानति है बहु रारी ॥ जो कबहूं दुहि है लुटि है मैं हरवा लेहुँ उतारी ॥ द्वौ मिलि हँसत लसत ललचाहि न रूप अनूप निहारी ॥ जुगुल जु-

गुल मुखचंद परस्पर भे चकोर बखचारी॥ १३०॥ आजुरी छबि अधिक लसी है॥ दिखुआनि आपीच अलौकिक अली आखिन बीच बसी है ॥ ठठि कटि कलित काछनी काछे मीत पिछौरी पीत कसी है॥ तापर वेनु विषान विराजित ताऊपर गोह मरसी है ॥ मुक्तमाल वनमाल रही फबि कवि उपमा कहे-को न असी है ॥ मरकत मंदरते मंदागिनि जुत पूजा जुगधार धसी है ॥ गुंज पुंज औतंस अमित दुति शैल धातु रुचि गात घसी है ॥ बर्हापीड नीड शो-भाको वदन विलोकि लजात शसी है ॥ कुण्डल मकर निकर अलकावृत अधर मधुर मृदु मंद हँसी है ॥ लियो चुराय रूप त्रिभुवनको दसन दमकि दरसात दसी है ॥ मैनके जाल विशाल नैन द्वौ सैन फांसि असि कोन फसी है ॥ जुगुल जाहि अनुराग नया छबि ताहि त्यागि मुख लाइ मसी है॥ १३१॥ बात कहै व्रजमें असि कोरी ॥ नोखो नयो भयो नंदमहरिको पायो राज दिना दसको री ॥ खोरि खरो वरजो नहिं मानत लै करसों कर दे मसको री॥ जुगुल अली न गहि वहि जैहों वाही परोर सकोच

सको री ॥ १३२॥ छोडु सखी व्रजको वसवो री ॥ नंदलाल नितप्रति सुनु सजनी कर वरजोरि खारि लसवो री ॥ नेक न डरत धरत करसों कर ताऊपर भोहै कसवो री ॥ भोर बांह गहै सांझ और कहै राजु करै ऐसो हँसवो री ॥ इतहि लोककी लाज लजावत उतहि प्रेम प्रीतम फँसवो री ॥ जुगुल सखी कुलकानि नदीको है अति कठिन पार धसवोरी ॥ १३३ ॥ भेद बतावो कोउ वैद न जाना ॥ वेदनके विरहा उर सजनी छेदि गयो वफे प्रेमके बाना ॥ अति कुलरीति प्रीति नहिं जानै बावरि लोग कहो नहिं माना ॥ जुगुल अली प्रभुसों बनि ऐहै औषध मूरि वृथा कोउ आना ॥ १३४ ॥ नंदद्वार यक जोगी आयो शृंगी नाद बजायो ॥ शीस जटा अँग भसम चढायो अरुण नैन छबि छायो ॥ रोवत खीझत कृष्ण सांवरो रहत नहीं हलरायो ॥ उठिकै गोद लियो नँदरानी द्वारे आनि दिखायो॥अलख २करि लियो जोगिये चरण चूंबि उर लायो ॥ श्रवण निकट कछु मंत्र सुनायो हस्यो कान्ह किलकायो॥

चिरंजीव सुत महरि तिहारो ये आसिष वरु पायो॥ जुगुलदास रमि चल्यो ग्रामते शंकर नाम बतायो ॥ १३५ ॥ हम चेरे नंदकुमारके ॥ जाति पांतिसों कहा काज है चाकर वाही द्वारके ॥ लाज विहाइ गाइ गुण गोविप्ररुचि सब विहारके ॥ पुलकित गात सुमिरि उर अंतर वृंदा विपन विहारके॥ कुंडल डोल कपोलनकी छबि गुंजाहार विहारके ॥ जुगुलदास कृत चारिन आश्रित आश्रित जूटे धारके॥ १३६॥

राग धमार—धरैं सीस रंग भरे मटुकिया फिरति बाल वृजकी खोरी ॥ लेहु री लेहु आनि कोउ गोरस गुप्त किये पट रोरी ॥ गहँकवार रसिया मनमोहन आई गयो तिहि वोरी ॥ दान दिये विनु जान न पैहौ बेंचि गई पहु चोरी ॥ चतुर नारि मुसकानि ललापै लै गागरि रंगसों बोरी ॥ अंजन आंजि अरुण दृग खंजन कहाति लला हो हो होरी ॥ मांडि मंजु मुख मुख मिलायो बाल भाल वरजोरी ॥ आंखि अँजाइ चले जदु-नंदन जुगुल हँसी व्रजकी गोरी ॥ १३७ ॥ क्यौं रहिये कहिये कह आली॥ थोरी बात घात चोरी-

की खोरि खरो यह कान्ह कुचाली ॥ वास बुरो व्रज हरो हरो स्वै हँसनि विलोकनि है घर घाली॥ माालि भये वनमालि फिरैं सँग फूल लये कर फूल-की डाली ॥ बाहेर कढत बढत दोहा ताकि जो रहै भवन द्वार गहि ताली ॥ रोस करै यह मोस परोसकी आनि सुनावत उचि औ खाली॥ वाविनु मो कह नीक न भावत याहितें लोग लगा-वत गाली ॥ जुगुल प्रीतिकी रीति कठिन है जाहि लागि सोई उर साली ॥ १३८ ॥ नोखो री यह नंदमहरिको ॥ पग मग धरत उरत नाहिं काहूं कह करो अलि करन कहर को ॥ मंद मंद धरि धाइ पाइ कहँ हरिजन जानव जाइ लहरको ॥ जो मुहि उगर वगर करि पावत लावत आवत नाउ गहरको ॥ १३९ ॥ मेरे ख्याल परौ मनमोहन गोहन लागो आठ पहरको ॥ मैं जमुना जल भरन जात थी आनि करै पट पीत छहरको ॥ वाविनु सखि मुहि कल नाहिं आवति लागत है घरवार जहरको ॥ जुगुल रचो विधि जो गये सो कह करे हँसि लोग सहरको ॥१४०॥ मन मैं मंजु मनोरथ

होरी ॥ सो हर गौरि प्रसाद एकतें कौशिक कृपा चौगुनी भोरी ॥ पन परिताप चाप चिंता निसि सोच सकोच तिमिर नहिं थोरी॥ रविकुल रवि अवलोकि सभासरहित चित वारि जवन विकसो री॥ कुँवर कुँवरि सब मंगल मूरति नृप द्वौ धरम धुरंधर धोरी ॥ राजसमाज भूरि भागी जिनु लोयन लोह लह्यो यक ठोरी॥ व्याह उछाह रामसीताको सुकृत सकेलि विरंचि रचो री ॥ तुलसिदास जानै सो यह सुख जिहि उर वसति मनोहर जोरी ॥१४१॥ नीखो तूं दानि भये व्रज डोलै ॥ गुञ्जनको हरवा हियरे बिज कुंचनिमाह कलोलै ॥ काहूकी मुटुकी चटकी गहि काहूको घूंघट खोलै ॥ काहूसों मधुरी बतियां छतियां घतियां नख छोलै ॥ तानत हो लकुटि भृकुटी हम जोलों सही अब तोलै॥ वेरिन तेरी न तेरे बवाकी राखि जंवा किन बोलै ॥ जो कबहुँ हरि पावैंगे हमहूं अपने करि टोलै ॥ जुगुल विहारि निहारि तिहारिसों कठि हों ठीठ ठठोलै ॥ १४२ ॥ सबै दिन नाहिं बरोबरि जात ॥ गर्भवासतें जनम भयो है

पौढे सूप समात ॥ कछु दिन मैं जननी उर लायो पै पीवत मुसुकात ॥ बालापन बालक सँग लीन्हो विहरत गलिन सुहात॥ अति चंचल सबही प्रिय लागत पीवत खेलत खात॥ जुवा भये जुवती रसमाते आनँद उर न समात ॥ गुरुजन पुरजन मात पिता हैं छोडि दये सब नात ॥ विरध भये तन हीन खीन भो बाढौ कंपित वात ॥ डोलि न सकत बोलि नहिं आवत कांपन लाग्यो गात ॥ तीरथ भजन दान नहिं कीनो कर मींडत पछितात ॥ सूरदास शठ कृष्ण कृष्ण भजु नाहक धोका खात ॥ १४३ ॥ अलि ये पथिक कहांते आये ॥ मगके लोग पूंछत रघुवरसों बोलत वचननि मधुर सुहाये ॥ धनि वह देस सुदेस धन्य वह धनि वै मात पिता जिन जाये ॥ कमलहुते अति पग दल कोमल वैरि कठिन जिन पग न चलाये ॥ रूप दूध दुहि प्रेम पत्रपर रस दै रसना जबनु जमाये ॥ सो हठि मथत बहुत विधि बुधिसों ता नवनीत कि तीनि बनाये ॥ छांडी लाज भवन गुरुजनकी देखन काज छनक बिलमाये ॥ तुलसी यकटक प्रभुहि विलो-

कत वैलोचन फिरि बहुरि न पाये ॥ १४४ ॥

चर्चरी छंद—रघुवर राजीव नैन शोभा तन कोटि मैन करुणा रस ऐन चैन रूप भूप माई ॥ देखौं सखि अतुलित छबि संत कंज कानन रवि गावत कल कीरति कविकोविद समुदाई ॥ मज्जन करि सरजुतीर ठाढे रघुवंसवीर ध्यावत पदकमल धीर निर्मल चितुलाई ॥ ब्रह्म मंडली मुनिंद्रु प्रेम मध्य इंदुवदन राजत सुखसदन लोक लोचन सुख-दाई ॥ विथुरित शिररुह वरूथ कुंचित कच समन जूथ शेष फनिन मणिन जूथ शशि समीप आई ॥ जनु सभीत दै अकीर राखे सुचि रुचिर मीर कुंडल छबि निरखि चोर चितवत सकुचाई ॥ तरु तमाल अरधभांति ज्यों सुकीर त्रिविधि पांति हेम-जाल अंतर परिताति ना उडाई ॥ शंकर हृदपुंडरीक विलसत हरि चंचरीक निर्चलीक संग हंस संतत रहि छाई ॥ अतिसै आनंद मूल तुलसिदास सानकूल हरत सकल शूल अवधि मंडन रघुराई ॥ ॥ १४५ ॥ देखो नंदलाल ग्वाल बाल संग आली ॥ मुरलि मधुर अधर धरे मोहित जग पाली ॥

मोहि लख्यो नंदलाल हँसत दै दै ताली॥ गोपिनसंग ऐठि बैठि करत है कुचाली ॥ लाली वृषभानुकी न सहौ ऊच खाली ॥ प्रीति रीति कठिन होत जाके उर साली ॥ इंदुदत्त हरि किगत्त छूटै भ्रम-जाली ॥ १४६ ॥ जसुदानन्द आनन्द कंद ग्वाल मंडली मुनिंद्र शोभा सुखसिंधु रूपराशि बनो माई ॥ कुंचित कच अति विराजित वदन उपर कमल राजित मनहु मधुप अवलि पदुम मंडित रहि छाई ॥ जरकसि शिर पाग सोहै कुंडल छवि रवि जु मोहै विधुके रथ अरुन थके सके ना चलाई ॥ असित अरघ दिघु लुचन भृकुटि कुटिल तिलक रुचन मोचन अघ तीनि लोक प्रगटे व्रज आई ॥ मधुर मुरलि धरे व्रजवनितन चित जु हरे लोकला-ज सुरपति जीक चरनन गति पाई ॥ सुनतैं धुनिज पवन रहे जमुनाजल नहिं जु वहैं खग मृग सब छकित भये चितवत चितु लाई ॥ ब्रह्मादिक सुर सुरेस खोजत नहिं पवमहेस जननी हित भक्ति जा-नि दांवरी बँधाई ॥ तुलसी अवलोकिक सोभा गिरिधर छवि दरस लुभा धनि धनि नंद घरनि तिरी

भागकि निकाई ॥ १४७ ॥ राजत राय जानकी जोरी ॥ स्याम सरोज जलदवर सुंदर दुलनि तडित वरन तन गोरी ॥ व्याह समय सोभित वितान तर उपमा कहत लवनि मति मोरी ॥ मनो मदन मंजुल मंडफमैं छबि सिंगार सोभा यक ठोरी ॥ सतानंद ओ वसिष्ठ आदि दै करत प्रशंस वंस दुहुँ वोरी ॥ इत अवधेस उतै मिथिलापति वाटि लेत सुखसिंधु लहो री ॥ मंगलमय द्वै अंग मनोहर ग्रथित चूनरी पीत पिछोरी ॥ कनक कलसकी देत भावरै निरखि रूप सारद भै वोरी ॥ जनक मुदित रनिवास रहसवस चतुर नारि डारत तृण तोरी ॥ गान निशान वीन धुनि सुनि मुनि वरषत पुहुप हरष कह कोरी ॥ उमगि रह्यो आनंद तिहूँ पुर सबै असीस तईस निहोरी ॥ तुलसिदास सुख सियरघुवरको वरनै का रसना सुठि थोरी ॥ १४८ ॥ जंवत राम लखन चिये री ॥ रेहे यकटक नर नारि जनकपुर लागत पलक कलपवित येरी ॥ धेमविवस मागत महेस सो देखतही रहियै नित ये री ॥ कैयै सदा वसहु इन नैनन कैयै नैन जाहु

जित येरी ॥ कोउ समुझाइ कहैं किन भूपहि बडे भाग आये इत येरी ॥ कुलिश कठोर कहा संकर धनु मृदु मूरति किसोर कित येरी ॥ विरचित इन्है विरंचि भुवन सब सुंदरता खोजत रित येरी॥ तुलसिदासते धन्य जन्म जन मन वच क्रम जिनके हित येरी ॥१४९॥ ऊधो तुम हौ अति बडभागी॥ अपरस रहत सनेह तेगते नाहिं न मति अनुरागी ॥ पुरइ निपात रहत जलभीतर तेल गागरी बूंद न लागी ॥ प्रेमनदीमैं पलना तोऱ्यो दीहि न रूप परागी ॥ सूरदास अबला हम भोरी गुरु चींटी ह्वै पागी ॥ १५० ॥ ऊधो देन चले व्रत नीको ॥ आवो री सब सखी सयानी लेहु सुजस कोटीको॥ अंगन कनक अंबर आभूषण देह गेह सबहीको ॥ सीस जटा धारि अंग भसम करि सिखवत निर्गुण फीको ॥ हमरे जान यहै जुवतिनको देत फिरत दुख पीको॥तिहि सराप जरि भयो स्याम तन अब न गहत उर जीको ॥ जाकी प्रकृति परी प्राननिसों सोचन भली भलीको ॥ जैसे सूर व्याल डसि भाजत का मुख परत अमीको॥१५१॥ ऊधो ये हित

लागत काहे ॥ निस दिन रटत रहत उन
तुम जो कहत हिय माहे ॥ लगत न पलक
दिशि चितवत विरह अनल तन दाहे ॥ उरते
सि बुझावत काहि न जोपै स्याम इहां हे ॥
परत रहन दे ऐसे हिय बाँधि अस जल थ
जनि डारौ लै निगम सिंधु मैं फिरि नहिं पैहो
उपजी प्रीति जाहि अँग जासों सो अब
निबाहे ॥ सूर कहा लै करै पपीहा ये ते सरस
हे ॥ १५२ ॥ मधुकर स्याम हमारे ईस ॥
ध्यान धरें उर अंतर आनै नवै न सीस ॥ जो
जाइ जोग उपदेसो जिनके मन दस बीस॥ एकै
एकै वह मूरति नित चितवत दिन तीस ॥
निरगुन ज्ञान आपनो जित कित डारत खी
सूरदास प्रभु नंदनँदन विनु और कोन जगदीस
॥१५३॥ मधुकर तुम हौ स्याम सखाई ॥ पाल
यह दोष बकसिपै सन्मुख करत ढिठाई ॥
रंक संपदा बकसी सोवत सपने पाई ॥ किन सं
की उडत चिरैया डोरी लागि खिलाई ॥ धाम
बांको कहौ कौन है बैठी कहां अथाई ॥

तें तोरि तरैया आनि धरी घर माई ॥ औ-
माला गुहि कोने अपने करनि बनाई॥ बिन
व चलत किन देखी उतरि पारको जाई ॥
बलन वनव्रत धारौ जोग समाधि लगाई ॥
तुम फिरि फिरि आवत यामें कौन
॥ १५४ ॥

इति सूरदासकृत सूरमंजरी समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेंकटेश्वर छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

पूरणमलभक्तका सांगीत.

यह पूर्णमलका सांगीत योगीश्वरबालकरामकृत कुरुक्षेत्रमध्यवर्त्तिकमलापुरनिवासिकुलशेखरपण्डितसे अतिपरिश्रमसे लब्ध भया बुद्धिमान् महाशय इस पुस्तकको साद्यन्त अवलोकन करेंगे तो स्त्रीचरित्रादि दुर्विषफल विचारोत्तर केवल भक्ति, ज्ञान, विरागादि साधनोंका अनुभव करेंगे इस ग्रन्थमें हास्य, रौद्र, वीर, भयानक करुणा, शांत, बीभत्सादि रसास्वादन छन्दबद्ध गद्यपद्यादिरचनाज्ञानपूर्वक कवितायें हैं. किंमत १। रुपया.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना.
कल्याण–मुंबई.

94172 55

[illegible]
22

छन्दार्णवपिंगल.

यह ग्रंथ श्रीमत्सकलकविकुलसरासि-
जवनप्रकाशनदिवाकर श्रीरामचन्द्रभक्तिप्र-
काशितान्तःकरण प्रतापगढदेशीय ट्यौंगा
ग्रामवासिभिखारीदासने बनाया है. इसमें
मात्रावृत्त वर्णवृत्त मेरु मर्कटी पताका
और प्रति छन्द लघु गुरु गणस्थापनरीति
और अति रमणीय छन्दोंके उदाहरण
हिन्दीभाषाकवित्व रसिकोंके उपकारार्थ
सुगमतासे वर्णित हैं. कीमत १२ आना.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

THE LIBRARY OF CONGRESS

MAR 77
BOUND BY
HNM

LC FT. MEADE
0 019 209 368 5